



अभिव्यक्ति

राजभाषा विभाग,
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
रायपुर मंडल
अंक : 18, दिसंबर 2022

मार्गदर्शक
संजीव कुमार,
मंडल रेल प्रबंधक

मुख्य संपादक
लोकेश विश्नोई,
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
निकेश कुमार पाण्डेय,
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक
मनोज कुमार साहू
वरिष्ठ अनुवादक

बिलासपुर - नागपुर वंदे भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ

दिनांक 11.12.2022 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा नागपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 1 से नागपुर - बिलासपुर वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन के डिब्बों का निरीक्षण किया और ऑनबोर्ड सुविधाओं का जायजा लिया। साथ ही उन्होंने इसके लोकोमोटिव नियंत्रण केंद्र का भी निरीक्षण किया। यह दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के लिए गौरव की बात है क्योंकि इससे अब नागपुर से बिलासपुर की यात्रा में 7-8 घंटे के स्थान पर केवल 5.30 घंटे का ही समय लगेगा। नागपुर-बिलासपुर के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस के शुभारंभ के पश्चात माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट किया कि : “नागपुर और बिलासपुर के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। इस ट्रेन से कनेक्टिविटी काफी बढ़ जाएगी।”



इस अवसर पर नागपुर रेलवे स्टेशन में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री भगत सिंह कोश्यारी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस, केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी, रेल राज्यमंत्री श्री राव साहेब पाटिल दानवे सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। नागपुर में आयोजित इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से रायपुर सहित विभिन्न स्टेशनों पर किया गया। इस अवसर पर यात्रियों

ने नागपुर - बिलासपुर वंदे भारत एक्सप्रेस में की गई अपनी यात्रा के अनुभव को साझा करते हुए बताया कि यात्रा के दौरान उन्हें बहुत ही सुरक्षित, आरामदायक एवं विमान जैसी यात्रा का अनुभव हुआ। रेलवे द्वारा प्रारंभ की गई ऐसी ट्रेनों का नियमित परिचालन करना स्वागत योग्य है।

शुभारंभ की गई इस नागपुर-बिलासपुर वन्दे भारत स्पेशल ट्रेन का रायपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। गाड़ी संख्या 20825/20826 बिलासपुर-नागपुर-बिलासपुर वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों का परिचालन सप्ताह में छः दिन (शनिवार को छोड़कर) दोनों छोरों से किया जा रहा है। इस ट्रेन का स्टॉपेज रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव एवं गोंदिया स्टेशनों पर दिए गए हैं।



प्रमुख विशेषताएं :

- यह ट्रेन देश में शुरू की जाने वाली छठी वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेन है और मध्य भारत की प्रथम।
- यह पूर्णतः स्वदेशी तकनीक पर आधारित सेमी हाई स्पीड ट्रेन है।
- यात्रा का अत्यंत आरामदायक एवं तेज माध्यम होने के कारण इससे इस क्षेत्र में पर्यटन को काफी बढ़ावा मिलेगा।
- यह बेहतर सुविधाओं से लैस होने के साथ-साथ बहुत हल्की एवं मात्र 52 सेकंड में 0 से 100 कि.मी./घंटे की गति और 180 किलोमीटर प्रति घंटे की उच्चतम गति तक पहुंचने में सक्षम है।
- यह वन्दे भारत एक्सप्रेस 2.0 है जिसका वजन 392 टन है, जबकि वन्दे भारत एक्सप्रेस 1.0 का वजन 430 टन है।
- यह ट्रेन उन्नत एवं अत्याधुनिक विशेषताओं से लैस है। इसमें स्टेनलेस स्टील कार बाडी के 16 चेयरकार कोच हैं। यात्रियों के लिए वाई-फाई कंटेंट ऑन डिमांड सुविधा है, यात्रियों को सूचना प्रदान करने एवं उनके मनोरंजन के लिए प्रत्येक कोच में 32" स्क्रीन लगी हैं। सभी कोचों में बायो वैक्यूम शौचालय तथा एक्जेक्यूटिव कोचों में 180 डिग्री घूमने वाली सीटों की व्यवस्था है।
- वन्दे भारत एक्सप्रेस के नए डिजाइन में एयर प्यूरिफिकेशन के लिए रूफ-माउंटेड पैकेज यूनिट (आरएमपीयू) में फोटो-कैटेलिटिक अल्ट्रावायलेट एयर प्यूरिफिकेशन सिस्टम लगाया गया है ताकि ताजी हवा और वापसी हवा के माध्यम से आने वाले कीटाणुओं, बैक्टीरिया, वायरस आदि से युक्त हवा को फिल्टर एवं साफ किया जा सके।
- वन्दे भारत एक्सप्रेस 2.0 बेहतर एवं विमान जैसी यात्रा का अनुभव प्रदान करता है। इसके ट्रैक्शन मोटर की धूल रहित स्वच्छ एयर कूलिंग यात्रा को सुखद एवं आरामदायक बनाती है।
- इसमें इमरजेंसी अलार्म बटन और इमरजेंसी टॉक बैक यूनिट भी लगाए गए हैं जिससे यात्री आपात स्थिति में चालक दल से बात कर सकते हैं।
- यह ट्रेन स्वदेश में विकसित ट्रेन टक्कर बचाव प्रणाली 'कवच' सहित अन्य उन्नत एवं अत्याधुनिक सुरक्षा सुविधाओं से सुसज्जित है।
- इसमें प्रयुक्त तकनीक पर्यावरण के अनुकूल है और इससे बिजली (ऊर्जा) की उल्लेखनीय बचत होती है।



रायपुर रेल मंडल में महापरिनिर्वाण दिवस मनाया गया

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल द्वारा संविधान निर्माता, भारत रत्न डॉ. बाबा साहेब भीम राव आम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार, अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्वोई, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.)

श्री आशीष मिश्रा, अनुसूचित जाति एवं जनजाति अखिल भारतीय रेलवे कर्मचारी एसोसिएशन के डिविजनल प्रेसिडेंट श्री भोली चौधरी, मंडल सचिव श्री वाय. के. मिहुलिया, द.पू.म.रे. मजदूर कांग्रेस यूनियन के मंडल समन्वयक श्री डी. विजय कुमार, द.पू.म.रे. ओबीसी यूनियन के प्रेसिडेंट श्री एच. प्रसाद राव, सचिव श्री वाय. रामेश्वर राव एवं वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी



श्री उदय कुमार भारती सहित सभी विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा आम्बेडकर के छायाचित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। साथ ही भगवान बुद्ध के चित्र पर भी पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया गया।



भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव आम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर अनुसूचित जाति एवं जनजाति अखिल भारतीय रेलवे कर्मचारी एसोसिएशन के मंडल सचिव श्री वाय के मिहुलिया द्वारा बुद्ध वंदना प्रस्तुत की गई, सभी कर्मचारी संगठनों के पदाधिकारियों द्वारा भारत रत्न डॉ. बाबा साहेब भीम राव आम्बेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार ने इस अवसर पर कहा कि बाबासाहेब आम्बेडकर बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनके द्वारा बनाया गया संविधान हमारे देश का ऑपरेटिंग सिस्टम है। साथ ही वे एक अच्छे इकोनॉमिस्ट भी थे। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम अपने रेल कार्यों व उपलब्धियों के आधार पर लक्ष्य निर्धारित कर कार्यों का आंकलन करेंगे, अपने व्यक्तित्व को सरल बनाएं और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे। अंत में श्री उदय कुमार भारती, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

घर बैठे पार्सल भेजने के लिये रेलवे और डाक विभाग की बैठक

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर रेल मंडल द्वारा दिनांक 6 दिसंबर 2022 को महानदी रेलवे सभागार डब्ल्यू. आर. एस. कॉलोनी में डाक और रेलवे के बीच संयुक्त पार्सल बुकिंग की कार्य योजनाओं को लेकर एक बैठक का आयोजन किया गया। उक्त बैठक में रेलवे बोर्ड के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (स्ट्रेटेजिक प्लानिंग एंड इम्प्लीमेंटेशन) श्री जी. वी. एल. सत्य कुमार, रायपुर रेल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक डॉ. विपीन वैष्णव सहित रायपुर मंडल के वरिष्ठ अधिकारी एवं छत्तीसगढ़ सर्कल के चीफ पोस्ट मास्टर जनरल विधान चंद्र रॉय, डायरेक्टर पोस्टल सर्विसेस छत्तीसगढ़ श्री दिनेश मिश्री एवं औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधि और व्यवसायी शामिल हुए।



इस बैठक का उद्देश्य रेल और पोस्टल विभाग के संयुक्त पार्सल उत्पाद सेवा' की अवधारणा से सभी को परिचित कराना है। डाक और रेलवे विभाग के संयुक्त प्रयासों से अब शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोग अपने घरों से ही अपने पार्सल विभिन्न स्थानों पर भेज सकेंगे। उन्हें अपने पार्सल भेजने के लिये रेलवे स्टेशनों पर आने की आवश्यकता नहीं होगी। इसके लिये रेलवे द्वारा एक नंबर जारी किया जायेगा, जिसकी सहायता से आप घर बैठे कॉल करके अपना पार्सल बुक करा सकते हैं। डाक विभाग का कर्मचारी आपके घर से आपका पार्सल लेकर रेलवे पार्सल गोदाम तक पहुंचायेगा। रेलवे उक्त पार्सल को आपके गन्तव्य रेलवे स्टेशन तक पहुंचायेगी। फिर रेलवे स्टेशन से उक्त स्थान के डाक विभाग का कर्मचारी उस पार्सल को निर्धारित पते पर ले जायेगा और उसे संबंधित व्यक्ति को सुपुर्द करेगा।



मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न



दिनांक 26.12.2022 को मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 59वीं बैठक आयोजित की गई। सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री लोकेश विश्‍नोई ने कहा कि केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने के लिए विभिन्न प्रावधान किए गए हैं। बैठक में मुख्य रूप से गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्यों एवं रेलवे बोर्ड द्वारा जारी किए गए विभिन्न दिशा-निर्देशों के अनुसार मंडल में राजभाषा हिंदी के प्रयोग - प्रसार हेतु किए गए कार्यों की समीक्षा की जाती है। चूंकि हमारा मंडल 'क' क्षेत्र में स्थित है, अतः हमारी जिम्मेदारी ज्यादा है और इसलिए हमें राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति ज्यादा सजग एवं प्रयत्नशील रहना है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा दिनांक 14.11.2022 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के निरीक्षण के दौरान दिए गए निदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करें। फाइलों और पत्रों में टिप्पणी एवं अन्य अभ्युक्तियां लिखते समय हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। समस्त शाखा अधिकारी अपने-अपने विभागों / यूनिटों में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करें। विभिन्न कार्यालयों एवं स्टेशनों में प्रदर्शित बोर्डों, सूचना पट्ट आदि को नियमानुसार हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में अवश्य बनाये जाएं।

उक्त बैठक में अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) सहित मंडल के विभिन्न शाखा अधिकारी एवं उनके प्रतिनिधि उपस्थित थे।

जियो टेक्सटाइल्स टेक्नोलॉजी

दुर्ग-दल्लीराजहरा रेलवे ट्रैक सन् 1959 में बनी थी। इस ट्रैक को बनाने का मुख्य उद्देश्य भिलाई, स्टील प्लांट को लौह अयस्क पहुंचाना था, पर समय के साथ इस पर यात्री गाड़ियां भी चलाये जाने लगीं। दुर्ग-दल्लीराजहरा के बीच स्थित रेलवे ट्रैक सभी तरह की जमीनी सतह से होकर गुजरती है जैसे मुरम, मिट्टी, काली मिट्टी, पत्थर, पहाड़, नदी, तालाब आदि। दुर्ग-दल्लीराजहरा क्षेत्र में काली मिट्टी बहुतायत में पायी जाती है जिसमें लोड वहन करने की क्षमता कम होती है। इस कारण अब इस रेलवे द्वारा जियो टेक्सटाइल्स टेक्नोलॉजी का उपयोग करके मिट्टी को मजबूती एवं बंधन प्रदान किया जाता है जिससे ट्रैक संरचना मजबूत हो जाती है एवं उसकी लोड वहन करने की क्षमता बढ़ जाती है। फलतः इससे रेल परिवहन किसी भी मौसम में सुरक्षित रूप से किया जा सकता है।



जियो टेक्सटाइल्स पॉलीमेरिक सामाग्रियों से बने उन पारगम्य कपड़ों की संरचनाएं होती हैं जो मुख्य रूप से सिविल इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों में उपयोग की जाती हैं। यह तकनीक मिट्टी, चट्टान और पानी का एक प्रकार का संयोजन होता है जो काफी टिकाऊ एवं मजबूत होता है और इसे काफी कम लागत में मिट्टी की परतों के नीचे स्थापित किया जाता है। रेलमार्ग के निर्माण में मिट्टी की परतों के नीचे जियो टेक्सटाइल्स स्थापित किए जाते हैं। बारिश के समय, बाढ़ में, प्राकृतिक घाटियों और तटीय गड़बड़ी के कारण पटरियों के नीचे की मिट्टी अपने स्थान से खिसक जाती है एवं ट्रैक संरचना खराब हो जाती है जिसे रोकने के लिए जियो टेक्सटाइल्स का उपयोग पटरियों के नीचे किया जाता है।

दुर्ग-दल्लीराजहरा के बीच कुल 16 कि.मी. जियो टेक्सटाइल बिछाने का कार्य पिछले सत्र 2022-23 में किया जा चुका है जिससे कि ट्रैक की गुणवत्ता में सुधार आया है तथा सुरक्षा के साथ गति भी बढ़ी है।

- मनीष कुमार शर्मा
मंडल इंजीनियर - II, रायपुर

शब्द परिचय : बताशा

बताशा - यह एक ऐसी मिठाई है जो शक्कर से बनती है। यह वात और शक से मिलकर बना है। "वात" अर्थात् हवा और "शक" का भाव शर्करा से है।

वाताशक: > वाताशा > बताशा।

इसका अर्थ हुआ ऐसा पदार्थ जिसके अन्दर वात यानी हवा भरी गई हो। इसे बनाने के दौरान इसमें हवा रखी जाती है। बताशा अन्दर से खोखला होता है और चारों ओर शकर की गोल पतली परत होती है। बताशा मुंह में रखते ही घुल जाता है। इसलिए "बताशे-सा घुल जाना" एक मुहावरा भी है।

संकलनकर्ता - हरीशचंद्र कर
लोको पायलट (गुड्स), रायपुर

प्रमुख राजभाषा गतिविधियां

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, रायपुर के निरीक्षण के दौरान दिए गए निदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु दिनांक 05.12.2022 को मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार की अध्यक्षता में एक विशेष बैठक आयोजित की गई। उक्त बैठक में अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन), अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.) सहित मंडल के समस्त शाखा अधिकारी उपस्थित थे।
- दिनांक 23.12.2022 को सामान्य भंडार डिपो, रायपुर में “ राजभाषा नीति एवं हिंदी टंकण ” विषय पर 01 हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।



- दिनांक 28.12.2022 को विद्युत लोको शेड, भिलाई में “ राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान एवं गूगल वायस टाइपिंग के माध्यम से हिंदी टंकण ” विषय पर 01 हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।



- रायपुर मंडल के अन्य स्टेशनों व कार्यालयों में गठित 05 राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की दिसंबर 2022 तिमाही की बैठकें निम्नानुसार आयोजित की गई –
 - सामान्य भंडार डिपो – दिनांक 23.12.2022
 - रायपुर स्टेशन – दिनांक 26.12.2022
 - दुर्ग स्टेशन – दिनांक 27.12.2022
 - विद्युत लोको शेड, भिलाई – दिनांक 28.12.2022
 - पी. पी. यार्ड, भिलाई - दिनांक 29.12.2022



“ किसी का तिरस्कार न करें ”

एक बार एक शिष्य ने विनम्रतापूर्वक अपने गुरु जी से पूछा- ‘गुरु जी, कुछ लोग कहते हैं कि जीवन एक संघर्ष है, कुछ अन्य कहते हैं कि जीवन एक खेल है और कुछ जीवन को एक उत्सव की संज्ञा देते हैं। इनमें कौन सही है?’

गुरु जी ने तत्काल बड़े ही धैर्यपूर्वक उत्तर दिया- ‘पुत्र, जिन्हें गुरु नहीं मिला उनके लिए जीवन एक संघर्ष है; जिन्हें गुरु मिल गया उनका जीवन एक खेल है और जो लोग गुरु द्वारा बताये गए मार्ग पर चलने लगते हैं, मात्र वे ही जीवन को एक उत्सव का नाम देने का साहस जुटा पाते हैं।’

यह उत्तर सुनने के बाद भी शिष्य पूरी तरह से संतुष्ट न था। गुरु जी को इसका आभास हो गया। वे कहने लगे- ‘लो, तुम्हें इसी सन्दर्भ में एक कहानी सुनाता हूँ। ध्यान से सुनोगे तो स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर पा सकोगे।’

उन्होंने जो कहानी सुनाई, वह इस प्रकार थी-

एक बार की बात है कि किसी गुरुकुल में तीन शिष्यों ने अपना अध्ययन सम्पूर्ण करने पर अपने गुरु जी से यह बताने के लिए विनती की कि उन्हें गुरुदक्षिणा में, उनसे क्या चाहिए। गुरु जी पहले तो मंद-मंद मुस्कराये और फिर बड़े स्नेहपूर्वक कहने लगे- ‘मुझे तुमसे गुरुदक्षिणा में एक थैला भरी हुई सूखी पत्तियाँ चाहिए, ला सकोगे?’



वे तीनों मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि उन्हें लगा कि वे बड़ी आसानी से अपने गुरु जी की इच्छा पूरी कर सकेंगे। सूखी पत्तियाँ तो जंगल में सर्वत्र बिखरी ही रहती हैं। वे उत्साहपूर्वक एक ही स्वर में बोले- “जी गुरु जी, जैसी आपकी आज्ञा।”

अब वे तीनों शिष्य चलते-चलते एक समीपस्थ जंगल में पहुँच गए। लेकिन यह देखकर कि वहाँ पर तो सूखी पत्तियाँ केवल एक मुट्ठी भर ही थीं, उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वे सोच में पड़ गये कि आखिर जंगल से कौन सूखी पत्तियाँ उठा कर ले गया होगा? इतने में ही उन्हें दूर से आता हुआ कोई किसान दिखाई दिया। वे उसके पास पहुँच कर, उससे विनम्रतापूर्वक याचना करने लगे कि वह उन्हें केवल एक थैला भर सूखी पत्तियाँ दे दे। अब उस किसान ने उनसे क्षमायाचना करते हुए उन्हें यह बताया कि वह उनकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि उसने सूखी पत्तियों का ईंधन के रूप में पहले ही उपयोग कर लिया है।

अब वे तीनों पास में ही बसे एक गाँव की ओर इस आशा से बढ़ने लगे थे कि हो सकता है वहाँ उस गाँव में उनकी कोई सहायता करें। वहाँ पहुँच कर उन्होंने जब एक व्यापारी को देखा तो बड़ी उम्मीद से उससे एक थैला सूखी पत्तियाँ देने के लिए प्रार्थना करने लगे लेकिन उन्हें फिर से एक बार निराशा ही हाथ आई क्योंकि उस व्यापारी ने तो पहले ही कुछ पैसे कमाने के लिए सूखी पत्तियों के दोने बनाकर बेच दिए थे लेकिन उस व्यापारी ने उदारता दिखाते हुए उन्हें एक बूढ़ी माँ का पता बताया जो सूखी पत्तियाँ एकत्रित किया करती थी। परंतु भाग्य ने यहाँ पर भी उनका साथ नहीं दिया क्योंकि वह बूढ़ी माँ तो उन पत्तियों को अलग-अलग करके कई प्रकार की औषधियाँ बनाया करती थी। अब निराश होकर वे तीनों खाली हाथ ही गुरुकुल लौट गये।

गुरु जी ने उन्हें देखते ही स्नेह पूर्वक पूछा- 'पुत्रो, ले आये गुरुदक्षिणा?'

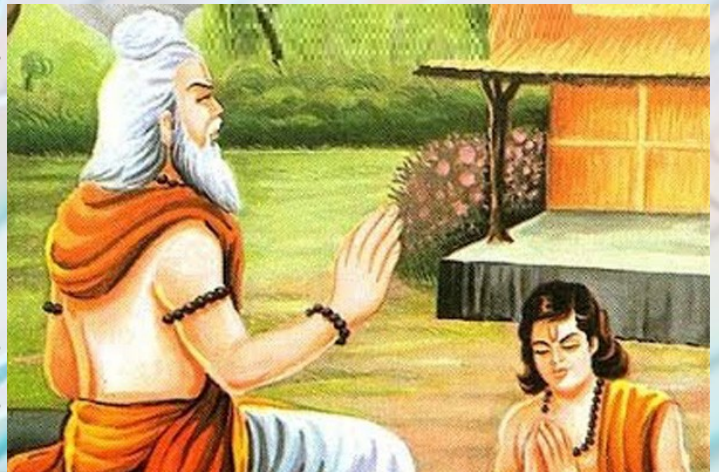
तीनों ने सिर झुका लिया।

गुरु जी द्वारा दोबारा पूछे जाने पर उनमें से एक शिष्य ने कहा - 'गुरुदेव, हम आपकी इच्छा पूरी नहीं कर पाये। हमने सोचा था कि सूखी पत्तियां तो जंगल में सर्वत्र बिखरी ही रहती होंगी लेकिन बड़े ही आश्चर्य की बात है कि लोग उनका भी कितनी तरह से उपयोग करते हैं।'

गुरु जी फिर पहले ही की तरह मुस्कराते हुए प्रेमपूर्वक बोले- 'निराश क्यों होते हो? प्रसन्न हो जाओ और यही ज्ञान की सूखी पत्तियां भी व्यर्थ नहीं हुआ करतीं बल्कि उनके भी अनेक उपयोग हुआ करते हैं; मुझे गुरुदक्षिणा के रूप में दे दो।'

तीनों शिष्य गुरु जी को प्रणाम करके खुशी-खुशी अपने-अपने घर की ओर चले गये।

वह शिष्य जो गुरु जी की कहानी एकाग्रचित्त हो कर सुन रहा था, अचानक बड़े उत्साह से बोला- 'गुरु जी, अब मुझे अच्छी तरह से ज्ञात हो गया है कि आप क्या कहना चाहते हैं। आपका संकेत, वस्तुतः इसी ओर है न कि जब सर्वत्र सुलभ सूखी पत्तियां भी निरर्थक या बेकार नहीं होती हैं तो फिर हम कैसे, किसी भी वस्तु या व्यक्ति को छोटा और महत्वहीन मान कर उसका तिरस्कार कर सकते हैं? चींटी से लेकर हाथी तक और सुई से लेकर तलवार तक-सभी का अपना-अपना महत्व होता है।'



गुरु जी भी तुरंत ही बोले- 'हाँ, पुत्र, मेरे कहने का भी यही तात्पर्य है कि हम जब भी किसी से मिलें तो उसे यथायोग्य मान देने का भरसक प्रयास करें ताकि आपस में स्नेह, सद्भावना, सहानुभूति एवं सहिष्णुता का विस्तार होता रहे और हमारा जीवन संघर्ष के बजाय उत्सव बन सके। दूसरे, यदि जीवन को एक खेल ही माना जाए तो बेहतर यही होगा कि हम निर्विषेप, स्वस्थ एवं शांत प्रतियोगिता में ही भाग लें।

संकलनकर्ता - लोकेश विशनोई

अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर

- हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

- कमलापति त्रिपाठी

- राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।

- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

- हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

- माखनलाल चतुर्वेदी

- हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।

- डॉ. अमरनाथ झा

- समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

माह के साहित्यकार - रामवृक्ष बेनीपुरी

जन्म : 23 दिसंबर 1899

निधन : 07 सितंबर 1968

जन्म स्थान : बेनीपुर, मुजफ्फरपुर, बिहार

प्रमुख कृतियाँ : अम्बपाली, सीता की माँ, संघमित्रा, अमर ज्योति, तथागत, शकुन्तला, रामराज्य, नेत्रदान, गाँव के देवता, नया समाज, पतितों के देश में, चिता के फूल, लाल तारा, कैदी की पत्नी, माटी, गेहूँ और गुलाब, उड़ते चलो, मील के पत्थर

विविध : “कलम का जादूगर”



गेहूँ और गुलाब कुछ अंश

गेहूँ हम खाते हैं, गुलाब सूँघते हैं। एक से शरीर की पुष्टि होती है, दूसरे से मानस तृप्त होता है। गेहूँ बड़ा या गुलाब? हम क्या चाहते हैं - पुष्ट शरीर या तृप्त मानस? या पुष्ट शरीर पर तृप्त मानस? जब मानव पृथ्वी पर आया, भूख लेकर। क्षुधा, क्षुधा, पिपासा, पिपासा। क्या खाए, क्या पिए? माँ के स्तनों को निचोड़ा, वृक्षों को झकझोरा, कीट-पतंग, पशु-पक्षी - कुछ न छूट पाए उससे ! गेहूँ - उसकी भूख का काफला आज गेहूँ पर टूट पड़ा है? गेहूँ उपजाओ, गेहूँ उपजाओ, गेहूँ उपजाओ ! मैदान जोते जा रहे हैं, बाग उजाड़े जा रहे हैं - गेहूँ के लिए।

बेचारा गुलाब - भरी जवानी में सिसकियाँ ले रहा है। शरीर की आवश्यकता ने मानसिक वृत्तियों को कहीं कोने में डाल रक्खा है, दबा रक्खा है।

किंतु, चाहे कच्चा चरे या पकाकर खाए - गेहूँ, तब पशु और मानव में क्या अंतर? मानव को मानव बनाया गुलाब ने! मानव मानव तब बना जब उसने शरीर की आवश्यकताओं पर मानसिक वृत्तियों को तरजीह दी। यही नहीं, जब उसकी भूख खाँव-खाँव कर रही थी तब भी उसकी आँखें गुलाब पर टँगी थीं।

उसका प्रथम संगीत निकला, जब उसकी कामिनियाँ गेहूँ को ऊखल और चक्की में पीस-कूट रही थीं। पशुओं को मारकर, खाकर ही वह तृप्त नहीं हुआ, उनकी खाल का बनाया ढोल और उनकी सींग की बनाई तुरही। मछली मारने के लिए जब वह अपनी नाव में पतवार का पंख लगाकर जल पर उड़ा जा रहा था, तब उसके छप-छप में उसने ताल पाया, तराने छोड़े ! बाँस से उसने लाठी ही नहीं बनाई, वंशी भी बनाई।

रात का काला-घुप्प परदा दूर हुआ, तब यह उच्छ्वसित हुआ सिर्फ इसलिए नहीं कि अब पेट-पूजा की समिधा जुटाने में उसे सहूलियत मिलेगी, बल्कि वह आनंद-विभोर हुआ, उषा की लालिमा से, उगते सूरज की शनैः शनैः प्रस्फुटित होनेवाली सुनहली किरणों से, पृथ्वी पर चम-चम करते लक्ष-लक्ष ओसकणों से! आसमान में जब बादल उमड़े तब उनमें अपनी कृषि का आरोप करके ही वह प्रसन्न नहीं हुआ। उनके सौन्दर्य-बोध ने उसके मन-मोर को नाच उठने के लिए लाचार किया, इन्द्रधनुष ने उसके हृदय को भी इन्द्रधनुषी रंगों में रँग दिया!

पाठकों की प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपने सुझाव व्हाट्सएप्प नंबर 9752877615 अथवा ई-मेल rbarsecr2006@gmail.com पर प्रेषित करें ताकि हम इसे और बेहतर बना सकें। यह ई-पत्रिका द.पू.म.रेलवे की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।

मंडल की गतिविधियां संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार।